Consumption Function

Q. Discuss psychological law of Consumption function. What are the factors affecting it?

Keynes ने अपनी पुस्तक "The General theory of Employment, Interest and money" में रोजगार स्तर के निर्धारण के लिए सामूहिक मांग तथा सामूहिक पूर्ति की अवधारणाओं का प्रयोग किया। सामूहिक मांग के दो घटक होते हैं एक उपभोग और दूसरा विनियोग।

केन्स के अनुसार किसी अर्थव्यवस्था का कुल उपभोग मुख्य रूप से आय पर निर्भर करता है। अर्थात-

$$C = f(Y)$$

इसप्रकार उपभोग एवं आय का सम्बन्ध उपभोग फलन कहलाता है। उपभोग फलन (Consumption function) बताता है कि आय के स्तर में वृद्धि होने पर उपभोग में अल्प वृद्धि होती है लेकिन आय के उत्तरोत्तर बढ़ने पर उपभोग व्यय की वृद्धि आय की वृद्धि से कम होती है। उपभोग की इस प्रवृत्ति को केन्स ने उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम का नाम दिया है।

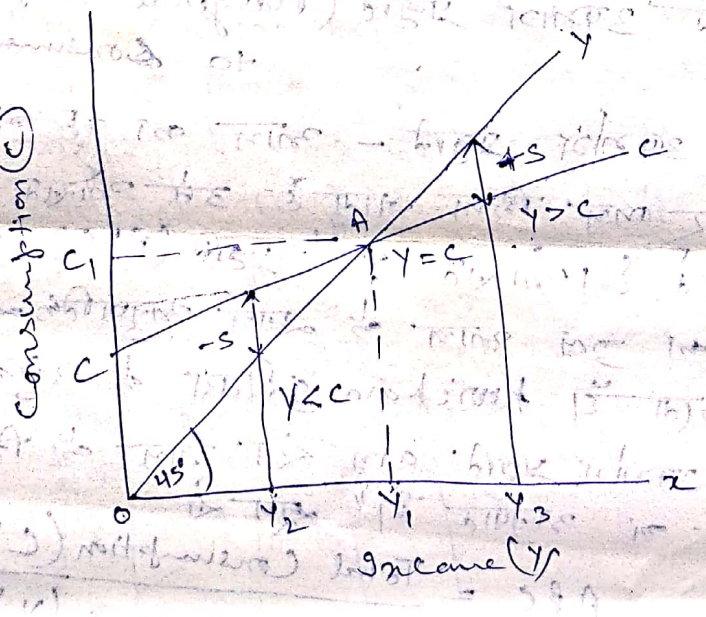

उपयुक्त चित्र में आय स्तर के शून्य होते हुए भी OC न्यूनतम उपभोग करते हैं क्योंकि जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुओं का न्यूनतम उपभोग आवश्यक होता है। A बिन्दु पर आय तथा उपभोग बराबर है आयस्तर OY_2 पर आय से उपभोग ज्यादा और आय स्तर OY_3 पर आय उपभोग से अधिक है।

Scanned with CamScanner

आय में वृद्धि होने पर उपभोग में कितनी वृद्धि होगी यह उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। Keynes ने उपभोग फलन के लिए उपभोग प्रवृत्ति शब्द का प्रयोग किया है। Dillard डिलर्ड के अनुसार "आय के विभिन्न स्तरों पर उपभोग की विभिन्न मात्राओं को प्रकट करने वाली अनुसूची को उपभोग प्रवृत्ति कहा जाता है।" Dillard ने इसे निम्न चित्र से प्रस्तुत किया है -

उपर्युक्त चित्र में आय बढ़ रही है लेकिन उपभोग आय के अनुपात में कम बढ़ रहा है।

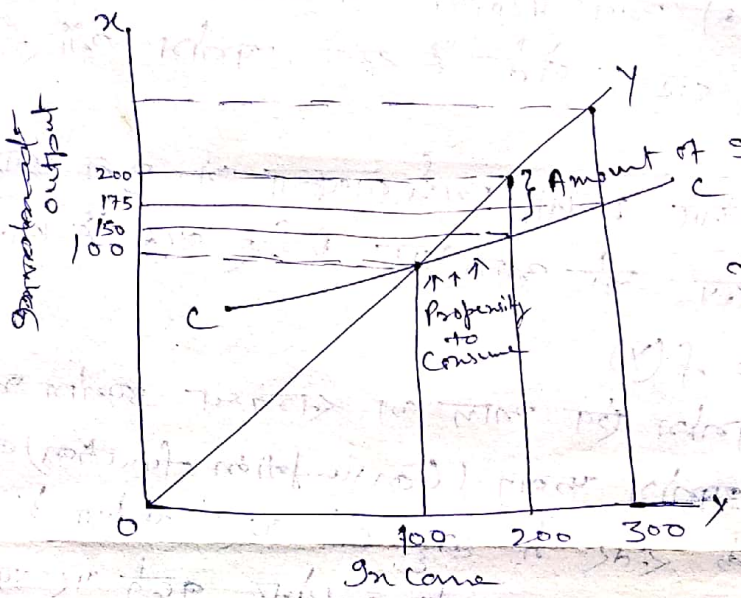

कीन्स के अनुसार उपभोग प्रवृत्ति दो भागों में बाँटा जा सकता है —

(1) औसत उपभोग प्रवृत्ति (Average Propensity to Consume)

(2) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume)

(1) औसत उपभोग प्रवृत्ति - आय का वह भाग जो उपभोग पर व्यय किया जाता है उसे औसत उपभोग प्रवृत्ति कहते हैं। औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) कुल उपभोग का कुल आय के साथ अनुपातिक सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। Kurihara कुरीहरा के अनुसार "औसत उपभोग प्रवृत्ति व्यय एवं आय के किसी भी विशेष स्तर का अनुपात है।" सूत्र से

$$APC = \frac{\text{Total Consumption } (C)}{\text{Total Income } (Y)}$$

Scanned with CamScanner

यदि आय स्तर 150 करोड़ रुपये है, जिसमें से 100 करोड़ उपभोग पर व्यय होते हैं तब

$$APC = \frac{C}{Y} = \frac{100}{150} = .66$$

अर्थात अर्थव्यवस्था के आय का .66% भाग उपभोग पर व्यय किया जाता है।

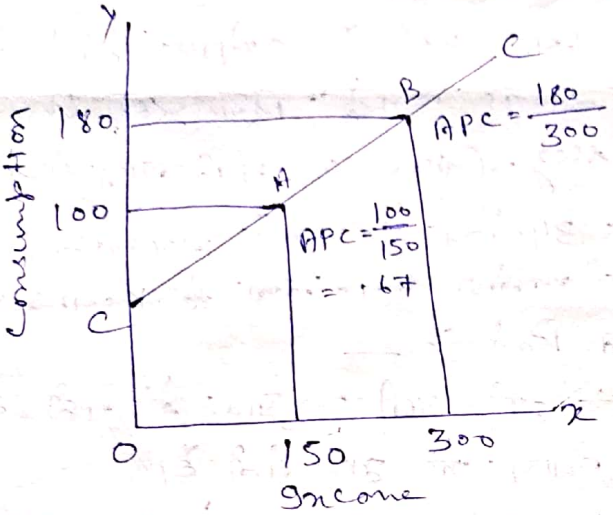

चित्र में CC उपभोग वक्र है। इस वक्र के बिन्दु A पर APC = 0.67 है और B बिन्दु APC = .60 है

2. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume)

कुल उपभोग स्तर में परिवर्तन का कुल आय में परिवर्तन के अनुपात को सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति कहलाता है। कुरीहारा के अनुसार "सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति उपभोग में होने वाले परिवर्तन तथा आय में होने वाले परिवर्तन का अनुपात है।"

सूत्र से :—

$$MPC = \frac{\text{Change in Consumption } (\Delta C)}{\text{Change in Income } (\Delta Y)}$$

यदि आय 100 करोड़ रु से बढ़कर 200 करोड़ हो जाती है तो आय में 100 करोड़ रु का परिवर्तन हुआ। आय में परिवर्तन के फलस्वरूप उपभोग 80 करोड़ से बढ़कर 120 करोड़ हो जाता है तो उपभोग में 40 करोड़ रु का परिवर्तन हुआ

तो $$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y} = \frac{40}{100} = 0.4$$

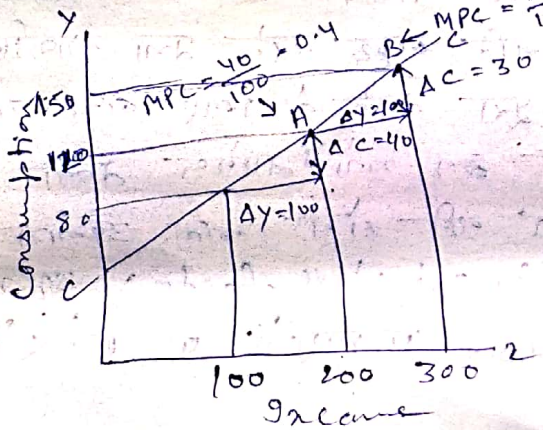

उपयुक्त चित्र में आय के परिवर्तन से उपभोग में परिवर्तन के अनुपात को दर्शाया गया है।

Scanned with CamScanner

Keynes का उपभोग प्रवृत्ति नियम निम्न मान्यताओं पर आधारित है —

① अर्थव्यवस्था में सदा साधारण अवस्था बनी रहनी चाहिए अर्थात युद्ध, क्रांति अथवा मुद्रास्फीति जैसी असाधारण अवस्था नहीं होनी चाहिए।

② उपभोग प्रवृत्ति स्थिर रहती है क्योंकि लोगों की उपभोग व्यय से सम्बद्ध आदतें स्थिर रहती हैं।

③ बाजार में Laissez faire की नीति लागू हो रही हो।

अगर उपरोक्त मान्यताएँ अर्थव्यवस्था में लागू हो रही हैं तो उपभोग प्रवृत्ति ~~कथ~~ से Keyns ने निम्न तथ्य स्थापित किये हैं —

(a) उपभोग व्यय में वृद्धि उसी अनुपात में नहीं होगा जिस अनुपात में आय में वृद्धि होती है।

(b) अतिरिक्त आय का एक भाग उपभोग पर व्यतित होगा और शेष बचत के रूप में रखा जाएगा।

(c) आय में वृद्धि के साथ उपभोग और बचत दोनों में वृद्धि होती है।

Factors affecting Consumption Function :—

उपभोग प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले तत्वों को दो भागों में बाँटा जा सकता है —

Subjective Factors :— उपभोग प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले आत्मगत तत्वों में वे मनोवैज्ञानिक प्रयोजन आते हैं जिनके कारण या तो मनुष्य अधिक उपभोग व्यय करता है अथवा अपव्यय से बचता है। वे मनोवैज्ञानिक तत्व जिनसे वह अधिक बचत करता है वे तत्व मुख्यतः परिवार स्नेह, वृद्धावस्था, सुरक्षा, दूरदर्शिता आदि हैं। व्यापारी भी अपने लाभ का एक अंश अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने तथा आकस्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बचा कर रखते हैं। Keynes के अनुसार इन मनोवैज्ञानिक तत्वों में अल्पकाल में परिवर्तन संभव नहीं होता अतः उपभोग कार्य प्रायः स्थिर रहता है। Subjective factors जो मनोवैज्ञानिक विशेषताएं तथा संस्थागत परम्पराओं पर निर्भर है जिनमें

परिवर्तन आसान नहीं है। इसीलिए इन Subjective factors के प्रभाव के कारण उपभोग मांग प्रायः समान या स्थिर रहता है।

Objective factors:—

Keyns ने six objective factors को दिया जिनपर उपभोग प्रवृत्ति निर्भर करती है :—

① Wage and Price Level — कीमत स्तर के बढ़ने के कारण वास्तविक आय में कमी हो जाती है जिससे उपभोग प्रवृत्ति भी घट जाती है। इसके विपरीत कीमत स्तर में कमी वास्तविक आय में वृद्धि लाकर उपभोग प्रवृत्ति को बढ़ाती है। इसप्रकार मजदूरी में वृद्धि से उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि तथा कमी से उपभोग प्रवृत्ति में कमी आयेगी।

② Depreciation घिसावट — घिसावट के कारण भी उपभोग में वृद्धि होती है। पुरानी मशीनों की जगह नई मशीनें स्थापित करनी पड़ती है।

③ Windfall Gains or Losses (अकस्मात लाभ या हानि) अकस्मात लाभ या हानि से भी उपभोग प्रवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है। 1920 ई॰ के बाद अमेरिका की आर्थिक व्यवस्था में लोगों को अकस्मात लाभ हुआ जिससे उपभोग में वृद्धि हुई।

④ Changes in Fiscal Policy (राजकोषिय नीति में परिवर्तन) राजकोषिय नीति के अन्तर्गत कर, सार्वजनिक व्यय तथा ऋण आते हैं जिसका प्रभाव उपभोग प्रवृत्ति पर पड़ता है। सरकार अपनी राजकोषीय नीति द्वारा प्रगतिशील कर प्रणाली अपनाकर धन के समान वितरण में सहायता देती है जिससे उपभोग को प्रोत्साहन मिलता है।

⑤ Changes in Expectation (आशाओं में परिवर्तन) — भविष्य में होने वाली घटनाओं के प्रति आशाओं द्वारा भी उपभोग प्रवृत्ति प्रभावित होती है। अगर किसी

Scanned with CamScanner

युद्ध या अन्य प्रकार के संकट की सम्भावना हो तो व्यक्ति अधिक वस्तुएं क्रय करेगा और इससे उपभोग प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलेगा। ऐसा कोरियन युद्ध (Korian War) के अवधि में पाया गया।

(6) Substantial Changes in the Rate of Interest (अकस्मात ब्याज दरों में परिवर्तन) –
Value of bonds and mortgages में अत्यधिक वृद्धि या ह्रास होने से ब्याजदर में परिवर्तन हो जाता है जिसके फलस्वरूप बचत में परिवर्तन होता है तथा उपभोग में भी परिवर्तन होता है।

इसप्रकार Keynes के अनुसार objective factors में परिवर्तन होने से ही उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन होता है। Subjective factors के द्वारा Form or slope and Normal position उपभोग प्रवृत्ति का प्राप्त होता है।

उपभोग प्रवृत्ति नियम से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जैसे जैसे आय बढ़ेगी आय एवं उपभोग के बीच की दूरी बढ़ती चली जायेगी जिसके फलस्वरूप बेरोजगारी की स्थिति आ जायेगी। इसके लिए आवश्यक है कि इस उपभोग एवं आय के Gap को विनियोग के द्वारा पाटा जाये।

By –
Dr Sandhya Rani
Maharaja College